बोचासणवासी श्रीअक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था, सत्संग शिक्षण परीक्षा

उत्तरपत्रक : सत्संग प्रवेश -1 (कुल अंक - 75)

(समय : सुबह 9.00 से 11.15) (रविवार, 5 जुलाई, 2015)

नोट : -(1) दी गई आवृत्ति के अनुसार किताबों के उत्तर ही मान्य रखें। उसके अलावा आवृत्ति के उत्तर मान्य न रखें।

(2) दाँयी ओर लिखे जो अंक है वह प्रश्न के अंक दर्शाते है।

(3) दाँयी ओर प्रश्न के पास में दिये गये कोष्टक में जो अंक है वह प्रश्न के उत्तर के पाठ और पृष्ठ नंबर दर्शाते है।

॥ महत्त्व की सूचना ॥

प्रश्नपत्र में प्रत्येक पेटाप्रश्न के दाँयी ओर बताये गये कोष्टक में लिखे हुए अंक के बाद के खाली कोष्टक में (अंक :1) परीक्षार्थी को दिये गये अंक लिखना है। यदि प्रश्न का उत्तर गलत हो तो उस कोष्टक में 0 (अकों में शून्य) लिखे। सही (✓) गलत (×) की निशानी प्रत्येक पेटाप्रश्न के बायी ओर खाली जगह में ही - प्रश्न शुरु हो उससे पहले ही करें।

॥ विशेष नोट ॥

आप जब पेपर जाँचे तब लंबे उत्तरों में उदाहरणार्थ, टिप्पणी, पांच मुद्दे के वाक्य, कारण आदि प्रश्न में आप जब दिये गये अंक की अपेक्षा कम अंक देते हो तब परीक्षार्थी ने कौन सा मुद्दा नहीं लिखा उसके आपने अंक काटे है। आप उसकी संक्षिप्त में बाँयी ओर नोट लिखे। उदा: मार्च 2013 में प्रवेश-1 में 'जोबनपगी का परिवर्तन टिप्पणी पूछी गई थी। जिसमें जोबनपगी प्रार्थना करते हुए अपने दोषों का वर्णन करते हुए कहते है कि, 'प्रभु! मैं कुलहीन, कुटील, कुपात्र, बुद्धिहीन हूँ। मैने आपको नहीं पहचाना, दिनबन्धु दया करों, मेरा महापाप मिटाओ।' यह मुद्दा परिक्षार्थी ने नहीं लिखा है तो पास में आप लिख सकते है कि, अपने दोष कहते है। इतना ही लिखना है। और आप अंक कम दे सकते है। इसलिए कि, दिये गए अंक की अपेक्षा कम अंक देने से पहले बाजु में कौन सा मुद्दा नहीं उसकी संक्षिप्त नोट लिखना जरुरी है।'

(विभाग : 1 नीलकंठ चरित्र, अठारहवी आवृत्ति - अप्रैल, 2011)

प्र.1. निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए। (कुल अंक: 9)

नोट : कौन कहता है 1 अंक, किससे कहता है 1 अंक, कब कहता है 1 अंक।

1. ''अभी तो अकेले ही विचरण करने का विचार है, इसलिए जब मैं आपको याद करुँ, तब आइएगा।'' (1/10)

⇨ नीलकंठ वर्णी - हनुमानजी से

⇨ वनविचरण करने निकले नीलकंठवर्णी के दर्शन करने आये हुए हनुमानजी उनकी सेवा में रहने के लिए कहते है तब।

2. ''मुझे यही चाहिए।'' (18/41)

⇨ नीलकंठवर्णी - राजा से

⇨ राजा का असाध्य रोग वर्णी ने मिटाया इसलिए राजा ने कुछ मांगने के लिए कहा तब वर्णी ने कैद किए हुए साधुओं को शीध्र मुक्त करने को कहते है तब।

3. ''मेरा पुत्र वीरा, साठ भैंसें और मेरी बाड़ी अमर रहें, ऐसा आशीर्वाद दीजिए।'' (41/89)

⇨ लखुबाई - नीलकंठवर्णी से

⇨ लखुबाई की सेवा से प्रसन्न होकर नीलकंठवर्णी ने उन्हे वरदान मांगने को कहा तब।

प्र.2. निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए। (दो से तीन पंक्ति में) (कुल अंक : 6)

1. भगवानदास नीलकंठवर्णी के चरण देखकर खुशी के मारे पागल हो गया। (31/68)

उ. नीलकंठ ने दायाँ पैर फैलाकर भगवानदास की गोद में रखा। कांटा निकालने के लिए जैसे ही भगवानदास ने चरण उठाया, वैसे ही उस कोमल चरण में उसे नौ चिन्ह् दिखाई दिये। उर्ध्वरेखा, अष्टकोण, स्वस्तिक, जामुन, जौ, वज्र, अंकुश, केतू, पद्म इन नौ चिन्ह् को देखकर वह खुशी के मारे पागल हो गया।

2. बीजल नीलकंठवर्णी के चरणों में गिर गया। (37/79-80)

उ. नीलकंठवर्णी ने कहा,'कोई बात नहीं, मुझे रस्से की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।' इतना कहकर वे कुएँ के पास आये। उन्होंने अपना कमंडलु कुएँ पर रखा ही था कि कुछ ही पलों में अठारह हाथ गहरा पानी ऊपर आने लगा। देखते ही देखते कुँआ पानी से छलछला उठा और वर्णी ने कमंडलु भर लिया। बीजल आश्चर्यचकित होकर नीलकंठ के चरणों में गिर गया।

3. लोज में जीवराज सेठ के घर में हो रही सभा को छोड़कर नीलकंठ चले गये। (46/99)

उ. नीलकंठ ने देखा कि, स्त्री और पुरुष दोनों की बैठकों का प्रबंध मर्यादा के अनुसार नहीं किया गया है। इस प्रकार कथा करने

से तो स्त्री और पुरुष दोनों के संयमदृष्टि में विघ्न हो सकता है, तथा संतो के ब्रह्मचर्यव्रत का भी भंग हो सकता है। अत: नीलकंठ तुरंत सभास्थल को छोड़कर जाने लगे।

प्र.3 निम्नलिखित किन्हीं एक प्रसंग के बारे में 15 पंक्ति में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। (वर्णनात्मक) (कुल अंक : 5)

1. नीलकंठ तोताद्रि में ।(33/72-73)

तोताद्रि में रामानुजाचार्य की मुख्य बैठक है, प्रसादि के काष्ठासन, मंदिर में भगवान विष्णु की शेषनाग के नीचे मूर्ति है। गद्दी पर सन्यासी जिअर स्वामी त्रिदंडी सन्यासी मुख्य आचार्य थे। नीलकंठ ने उनके पास से विष्णु के आयुधों के चिन्ह लिए। उनके ग्रंथ सुनकर उसका रहस्य जानकर उनके जैसी उपासना उन्हें पसंद आई। अन्य संप्रदाय की अपेक्षा में उनको रामानुजाचार्य का मत और संप्रदाय सरल और अच्छा लगा। इसलिए वे यहाँ कुछ महिनों तक रुके। यहाँ धन और व्यसनों का त्याग था परन्तु त्यागी वर्ग स्त्रीयों का प्रसंग रखते थे। नीलकंठ ने जिअर स्वामी से प्रश्न किया,'शास्त्रों में त्यागीयों के लिए स्त्री, द्रव्य और रसास्वाद का त्याग करने के लिए कहा है। तो त्यागीयों को कैसा मार्ग अपनाना चाहिए।' स्त्री के त्याग की बात उन्हें अकल्प्य लगने से उन्हें नीलकंठ पर गुस्सा आया और कहा,'इस लड़के को यहाँ से बाहर निकाल दो। यह त्यागी के धर्म की बातें करता है। छोटा बच्चा होकर समग्र ब्रह्मांड को नापता है, इस लडके को यहाँ से बिदा किजीए। बाद में ही मैं अन्नजल ग्रहण करुँगा। ऐसे शिष्य मुझे नहीं चाहिए।' नीलकंठ ने कहा,'गुरु के लिए क्रोधित होना वह गुरु और शिष्य का धर्म नहीं कहलाता। जैसे थोड़ी-सी चिंगारी पूरे महल को जला देती है, उसी प्रकार थोड़े-से क्रोध का परिणाम मोक्ष को बिगाड़ देता है।' इस प्रकार समझाते हुए नीलकंठ पर जिअर स्वामी अधिक क्रोधित हुए। और मठ में से उन्हें निकाल दिया। नीलकंठ मठ के सामने एक जगह थी वहाँ रात निवास किया। वहाँ से दक्षिण में कन्याकुमारी आए। इस स्थान को कुमारी का क्षेत्र भी कहते है। यहाँ बंगाल का समुद्र और हिंदी महासागर का मिलन होता है। वहाँ स्नान करके वर्णी लम्बें नारायण और छोटे नारायण के दर्शन करके आगे बढ़े।

2. नीलकंठ लोज में।(43/93-96)

लोजपुर गाँव में आते ही नीलकंठ वर्णी का मन इस भूमि के प्रभाव से शांत हो गया। गाँव के बाहर उत्तर दिशा में आई हुई बावड़ी के किनारे बैठ गए। वर्णी पर पनिहारीयों की नज़र पड़ते ही वे वहाँ स्थिर हो गई और उन्हें देखते ही उनके वैराग्य से वे द्रवित हो गई। ऐसी सुकुमार अवस्था में ऐसा वैराग्य और ऐसी तपस्या करने का विचार क्यों आया होंगा? इस प्रकार आपस में चर्चा करने लगी। इतने में आश्रम में से पानी भरने के लिए आए हुए सुखानंद स्वामी की दृष्टि वर्णी पर आकृष्ट हो गई। वर्णी अब अपनी आँखें खोले इसकी प्रतिक्षा में वे वहाँ पर खड़े रहे। वर्णी के आँखें खोलते ही उन्होंने पूछा,'ब्रह्मचारी जी! आप कहाँ से पधार रहे है? आपका शुभनाम, आपके माता-पिता का नाम क्या है? आपने क्यों वैराग्य ग्रहण किया? आपके गुरु कौन है? यह जानने के लिए मेरा मन उत्सुख है।' वर्णी ने कहा,'त्यागी को कभी नात-जात, प्रांत या रिश्तेदार होते ही नहीं है, जो हमें भव बंधन से मुक्त करावे वही माता-पिता और वही हमारे गुरु है! हम ऐसे गुरु की खोज में निकलें है।' नीलकंठ वर्णी ने कहा,'आपका शुभ नाम और आप किसके शिष्य है, आपका कौन-सा संप्रदाय है वह बताईए?' 'मेरा नाम सुखानंद है, हमारे गुरु रामानंदजी है। वे रामानुजी दिक्षा के आचार्य है, उनका यहाँ आश्रम है। यहाँ पचास संतों इस आश्रम में रहते है।' वर्णी ने रामानंद स्वामी के विषय में जिज्ञाशा से पूछा। रामानंद स्वामी फिल्हाल कहाँ पर है? सुखानंद स्वामी ने कहा,'रामानंद स्वामी फिल्हाल कच्छ में विचरण कर रहे है। उनके मुख्य शिष्य मुक्तानंद स्वामी यहाँ पर है। आप जैसे संत के दर्शन यहाँ सभी संतों को होंगे तो मुक्तानंद स्वामी भी प्रसन्न होंगे तो आप आश्रम में पधारें।' नीलकंठ ने कहा,'हम आबादी में नहीं जाते।' सुखानंद स्वामी ने कहा,'यदि आप नहीं आएँगे तो हमारे गुरु मुक्तानंद स्वामी आपको लेने के लिए यहाँ आएँगे।' सुखानंद स्वामी के साथ नीलकंठ लोज में रामानंद स्वामी के आश्रम में आते ही उन्हें मुक्तानंद स्वामी के दर्शन हुए। आश्रम और उनके साधुओं को देखकर नीलकंठ को शांति हो गई। उन्होंने आश्रम का आध्यात्म ज्ञान का सिद्धांत जानने के लिए मुक्तानंद स्वामी से पाँच प्रश्न पूछे। जीव, ईश्वर और माया क्या है? और ब्रह्म और परब्रह्म के स्वरुप कैसे है? नीलकंठ के प्रश्न सुननकर प्रभावित हुए मुक्तानंद स्वामी को नीलकंठ की महानता का अनुभव हुआ। मुक्तानंद स्वामी का उत्तर सुनकर नीलकंठ को गुरु रामानंद स्वामी की मुक्तानंद स्वामी पर केवल कृपा की अनुभूति हुई, उन्हें रामानंद स्वामी के दर्शन की तीव्र लगन लगी थी। परन्तु मुक्तानंद स्वामी के आसवासन से वे आश्रम में रुकने के लिए तैयार हुए और 7 वर्ष 1 माह और 11 दिन के अविरत विचरण की यहाँ पूर्णाहुति हुई। नीलकंठ वर्णी कही नहीं रुके थे, परन्तु यहाँ रुकने के लिए तैयार हुए थे। उन्होंने लोज में रुकना निश्चित किया। वह गुजरात के इतिहास की करवट बदलने की अमूल्य क्षण थी।

3. बोचासण में नीलकंठ। (36/76-78)

बोचासण गाँव के मुखी कानदास पटेल ने ब्राह्मणों की चौरासी रखी थी। गाँव के पाटीदार वेरीभाई ने नीलकंठवर्णी के आगमन के समाचार कानदास को दिए। कानदास ने अपने पुत्र कासीदास को नीलकंठवर्णी को बुलाने के लिए भेजा। नीलकंठवर्णी की तेजस्वी मूर्ति देखकर काशीदास वहीं स्थिर हो गए और प्रार्थना करते हुए कहा,'आप मेरे घर भोजन के लिए पधारें।' काशीदास के मातृश्री दर्शन कर रहे थे, इतने में नीलकंठ वर्णी ने सामने से कहा,'माँ! लड्डु लाईए।' ब्राह्मणों ने लड्डु देने के लिए इन्कार करते हुए कहा,'अभी भोग नहीं लगाया है।' वापस आई हुई नानी माँ से नीलकंठ वर्णी ने दूध और चावल माँगे। परन्तु घर में दुध की एक बूंद भी नहीं थी। दोपहर का समय होने से भैंस भी दूध नहीं देती। इसलिए कानदास उलझन में पड़ गए। परन्तु पत्नी नानी बाई को नीलकंठ की वाणी पर विश्वास था। इसलिए वे घड़ा लेकर भैंस के पास गई और भैंस ने दूध छोड़ा। घड़ा दूध से भर गया। नीलकंठ वर्णी को दूध-चावल और शक्कर का भोजन करवाया। नानी माँ ने नीलकंठ वर्णी से विनंती करते हुए कहा,'अब आप हमारे घर पर ही रहे।' तब नीलकंठ वर्णी ने कहा,'माँ, हम वापस यहाँ आएँगे। तब यहाँ घर करके रहेंगे। हमें अभी बहुत से कार्य करना बाकी है, इसलिए अभी तो हम जाएँगे। आपके पुत्र और आपका परिवार महान भाग्यशाली होंगे। पूरा परिवार भक्त बनेंगे और वे हमारी भक्ति करेंगे।' ऐसे आशीर्वाद देते हुए नीलकंठ वर्णी रामजी मंदिर में पधारें। शाम को मंदिर में आरती उतारकर नीलकंठ वर्णी ने बाबाजी के सामने देखते हुए भविष्यवाणी उच्चारित करते हुए कहा,'ये मूर्तियाँ भविष्य में यहाँ होनेवाले भव्य मंदिर में बिराजित होगी।' गाँव के लोगों ने नीलकंठ वर्णी से कहा,'आप यहीं रुक जाईए।' तब बाबाजी बोल उठे,'ये लड़का यहाँ क्या करेंगा, यहाँ इसकी कोई जरुरत नहीं है।' तब नीलकंठ वर्णी ने मुस्कुराते हुए कहा,'हम ऐसी छोटी जगह में रहे ऐसे नहीं है। हमारे लिए तो यहाँ पर बहुत बड़ा धाम होगा।' दूसरे दिन नीलकंठ वर्णी वहाँ से निकल गए।

प्र.4 निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए। (कुल अंक : 5)

नोट : आधे अधूरे उत्तर के अंक दे नहीं।

1. नीलकंठवर्णी किस से परे और किस से रहित है? (4/15)

उ. नीलकंठवर्णी देह और घर-परिवार से परे है और काम, क्रोध, लोभ आदि दोषों से रहित हैं।

2. नीलकंठवर्णी को अष्टांगयोग किसने सिद्ध कराया? (17/28)

उ. नीलकंठवर्णी को अष्टांगयोग गोपाल योगी ने सिद्ध कराया।

3. खंभे को पकड़कर रहने का अर्थ क्या है? (48/102)

उ. खंभे को पकड़कर रहने का अर्थ अर्थात् सत्संग के स्तंभ के समान मुक्तानंद स्वामी की आज्ञा का पालन करना, यही गुरु के आदेश का रहस्य है।

4. नीलकंठवर्णी गुजरात में सबसे पहले किस शहर में पहुँचे? (35/74)

उ. नीलकंठवर्णी गुजरात में सबसे पहले सूर्यपुर (सूरत) शहर में पहुँचे।

5. वनविचरण दौरान भगवान शंकर और सती ने नीलकंठवर्णी को क्या भोजन दिया? (32/71)

उ. वनविचरण दौरान भगवान शंकर और सती ने नीलकंठवर्णी को सत्तू का भोजन दिया।

प्र.5 निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए कोष्टक में (✓) सही का निशान करें।

(कुल अंक : 4)

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं। सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण अंक दिए जाएँगे, अन्यथा एक भी अंक नहीं दिया जाएगा।

1. चमत्कारों की परंपरा।

उ. (1) गोबर से सारे ब्रह्मांड का नज़ारा दिखाई देता था। (2) सोलह मन खीरे की गठरी उनके सिर से एक बित्ता उपर झूल रही थी। (49/103)

2. नीलकंठवर्णी वंशीपुर में।

उ. (1) नीलकंठवर्णी की सेवा से राजा और रानी कृतार्थ हो गए। (4) रानी समाधिस्थ हो गई। (10/24)

प्र.6 निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए। (कुल अंक : 4) **नोट : दोनों उत्तर सही हो तभी अंक दें।**

1. कठारी, मोह (15/35)
2. 12, तप (14/32)
3. पीपलाणा, शालीग्राम (42/90)
4. जेतपुर, सहजानंद स्वामी (55/117)

(विभाग -2 : सत्संग वाचनमाला भाग-1, बारहवी आवृत्ति - अप्रैल, 2011)

प्र.7 निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए। (कुल अंक: 9)

नोट : कौन कहता है 1 अंक, किससे कहता है 1 अंक, कब कहता है 1 अंक।

1. ''मुझे तो यह ढकोसला लगता है।'' (1/2)

⇨ बापु (वजेसिंह) - कवि से (लाडुदानजी से)

⇨ कवि ने राज-सुनार के भाल में गोपीचंदन के सुन्दर लम्बे तिलक के अंदर कुमकुम का सुहावना गोल टीका देखकर कविश्री ने पूछताछ की तब बापु ने कहा काठी लोग स्वामिनारायण को भगवान मानते है तब।

2. ''मैं कल धाम में जानेवाला हूँ,मेरे लिए पालकी तैयार रखना।'' (2/18)

⇨ देवानंदस्वामी - मेराई भक्त से

⇨ मूली मंदिर का अधूरा कार्य उनके हाथो पूरा हुआ उसके बाद देवानंद स्वामी संवत् 1990 श्रावण कृष्णा नवमी के दिन मेराई नामक भक्त से कहते है।

3. ''तुम पर भगवान और साधुसंन्तो की अखण्ड कृपादृष्टि बनी रहेगी।'' (7/51)

⇨ भगतजी - जेठा भगत से

⇨ भगतजी की अंतिम बिमारी में जेठा भगत ने तेईस दिन उनकी निजी सेवा की भगतजी को प्रसन्न किया। इसलिए प्रसन्न हुए भगतजी ने वर देते हुए कहा।

प्र.8 निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए। (दो से तीन पंक्ति में) (कुल अंक : 4)

1. श्रीजीमहाराज ब्रह्मानंद स्वामी को 'यति' कहते थे। (1/8)

उ. जूनागढ़ में श्रीजीमहाराज के उत्सव में नागरों ने द्वेष से ब्रह्मानंद स्वामी को बैठने के लिए मदोन्मत घोड़ा भेजा था। ब्रह्मानंदस्वामी के स्पर्श से घोड़ा शान्त-सरल हो गया। इसलिए श्रीजीमहाराज उनको 'यति' कहते थे।

2. देवीदान को शंकर भगवान ने वरदान दिया। (2/15)

उ. शिवजी मानो प्रत्यक्ष रूप से सामने बैठे हों, उस भाव से उसने अभिषेक किया और बेलपत्ते चढ़ाये, आँखे टिकटिकी लगाकर शंकर भगवान को देखने लगीं। प्रभु से मिलने की तीव्र लालसा उसमें थी। इसलिए प्रभु ने बालक को साक्षात् दर्शन देकर वरदान दिया।

प्र.9 'आशाभाई की सर्वकर्ता और दिव्यभाव की समझ' - **प्रसंग के बारे में 15 पंक्ति में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। (वर्णनात्मक) (कुल अंक : 5) (8/62-63)**

उ. रढु गाँव के आशाभाई की पुरुषोत्तम पुरा गाँव में जमीन और आवास थे। पूरे वर्ष की फसल को एक मकान में संग्रह करते थे। - अकस्मात से किसी से जलती हुई दियासलाई नीचे गीर गई - भयंकर आग लगी सारी फसल और माल-सामान जल गया। - पहने हुए कपड़ो से बाहर निकले - स्वामीश्री की कृपा से और ज्ञान दृष्टि से उन्हे बहुत दु:ख नहीं हुआ - अपनी कसौटी करने के लिए भगवान का ही यह कर्तव्य है ऐसा उन्होंने मान लिया। रढु गाँव से खिचड़ी मंगवाकर खाई - शास्त्रीजीमहाराज को इसका पता चलने पर वे दूसरे दिन वहाँ पधारे। - नुकसान देखकर दु:खी हुए दोनों को शांतवना दी। बाद में शास्त्रीजीमहाराज परीक्षा लेते हो इस प्रकार कहे, 'यह तो हमारे कार्य में ही विघ्न आया।' - सारंगपुर मंदिर की मूर्तियाँ लेने के लिए जयपुर जाने के लिए हम पैसे लेने आये थे और यह आपत्ती आ गई। दूसरों को तो ऐसी परिस्थिति में ऐसी बात सुनकर अभाव आ जाये। परंतु आशाभाई शास्त्रीजीमहाराज में अखंड दिव्यभाव रखते थे। आशाभाई ऐसा मौका क्यों जाने दें? उन्होंने मोतीभाई को शराफ के वहाँ से पैसे लाने को कहा। और वह पैसे उन्होंने शास्त्रीजीमहाराज के चरणों में रख दिये। स्वामीश्री आश्चर्य से यह देखते रहे और प्रसन्न हो गये। ऐसी विषम परिस्थिति में ऐसी सेवा किसी से नहीं हो सकती। आशाभाई ने गद्‌गदित भाव से कहा,'ऐसे समय में तो जो मौज दे सके ऐसा समर्थ हो वही ऐसी मंगनी कर सकता है। इसलिए ऐसा मौका हम क्यों जाने दे?' ऐसी उनकी निष्ठा और सर्वोपरी समझ थी।

प्र.10 निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए। (कुल अंक : 4)

नोट : आधे अधूरे उत्तर के अंक दे नहीं।

1. अफ्रिका से आये शिलिंगो के पोस्टल ऑर्डर का निर्गुण स्वामी ने क्या किया? (7/56-57)

उ. अफ्रिका से आये शिलिंगो के पोस्टल ऑर्डर को निर्गुण स्वामी ने कोठार में जमा करवा दिये।

2. झीणाभाई ने किसकी महिमा समझ कर सेवा की? (4/32)

उ. झीणाभाई ने महिमा समझ कर कमलशीभाई वांझा की सेवा की।

3. आशाभाई को छोटा उदेपुर जाने की मना करते वक्त स्वामीश्री ने क्या कहा? (8/60)

उ. 'तुम यदि हमें महान व्यक्ति मानते हो तो मेरा कहा मानकर वहाँ जाने की जिद छोड़ दो और समझ लो कि तुम्हारे सारे दु:ख मेरी गद्दी के नीचे दबे है।'

4. श्रीजीमहाराज ने झबकी खाते हुए ब्रह्मानंद स्वामी के सिर पर बेरखा मारा तब उन्होंने कौन सा भजन बनाया? (1/9)

उ. श्रीजीमहाराज ने झबकी खाते हुए ब्रह्मानंद स्वामी के सिर पर बेरखा मारा तब उन्होंने 'तारो चटक रंगीलो...' भजन बनाया।

प्र.11 निम्नलिखित विषय के लिए सूचनानुसार छः सही क्रमांक और उस सही क्रमांक को घटनाक्रम के लिखिए।

(कुल अंक : 6)

विषय : जीवुबा का ब्रह्मचर्यव्रत (6/43)

1. केवल सही क्रमांक	1	3	5	6	9	11
1. यथार्थ घटनाक्रम	6	1	3	5	11	9

सूचना : (1) केवल सही क्रमांक के सभी छः उत्तर क्रमांक सही होंगे तो ही 3 अंक प्राप्त होंगे।
(2) यथार्थ पंक्तिक्रम भी सही होगा तो ही 3 अंक प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा।

नोट : (1) केवल सही क्रमांक : उत्तर में दिये गए अंक कोई भी क्रम में लिखे हो परंतु सभी अंक सही हो तो ही संपूर्ण 3 अंक दें अन्यथा एक भी अंक न दें। (2) यथार्थ घटनाक्रम : घटनाक्रम उत्तरपत्रक अनुसार हो तो ही संपूर्ण सही मानकर 3 अंक दें अन्यथा एक भी अंक न दें।

प्र.12 निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए। (कुल अंकः 4)

सूचना: सम्पूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही अंक प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी अंक प्राप्त नहीं होगा।

1. **भक्तराज जीवुबा :** उनकी ईच्छा पूरी करने के लिए महाराज ने फूल की गेंद आकाश में उछाली। (6/46)
2. **सद्गुरु ब्रह्मानंद स्वामी :** लाडुदानजी को यहीं छोड़कर उनके मामा खाणगाँव पहुँचे और गढ़पुर में घटी सारी बातें उनके परिवार के लोगों को कही। (1/4)
3. **सदगुरु शुकानंद स्वामी :** डभाण में आकर बसे हुए विप्र जगन्नाथ वैसे तो नडियाद के निवासी थे। संवत् 1855 में उनका जन्म हुआ था। (3/21)
4. **भक्तराज जोबनपगी :** महाराज जब भी गुजरात में पधारते तब जोबन और उसके भाई उनके अंगरक्षक बनकर उनकी सेवा करते और सतत साथ ही घूमते। (5/37)

विभाग - 3 : निबंध

प्र.13 निम्नलिखित किसी एक विषय पर करीब 30 पंक्ति में निबंध लिखिए। (कुल गुण : 10)

नोट : निबंध वह मौलिक विषय है, उसमें दिये गये मुद्दे के अलावा अन्य कई पहलू समाविष्ट कर सकते है, जैसे कि मौलिकता, संप्रदाय तथा अन्य संप्रदाय संबंधित ज्ञान, कथावार्ता के आधार पर विषय वस्तु का विस्तृत वर्णन, अन्य आधारभूत साहित्य का सहारा आदि मुदों का समावेश हो सकता है। परीक्षार्थी ने विषय के अनुरुप इसके अलावा अन्य दूसरें प्रसंग लिखे हो तो उसे मान्य रखकर अंक दीजिए।

1. **'चरोतर के प्रागण में प्रकट हुआ एक मंगल दीप' : शास्त्रीजी महाराज :** 1. शास्त्रीजी महाराज के रुप में एक दीपक प्रकट हुआ, जिसने पूरे विश्व को प्रकाशित किया- महेलाव में उनका जन्म - उस प्राकट्य की मांगलिक तिथि वसंतपंचमी - ऐतिहासिक वर्ष संवत् 1921 - गाँव चरोतर भूमि का सुहावना गाँव महेलाव - 150 वर्ष पूर्व का यह समय था। 2. दि. 31-1-1965 के दिन इस गाँव के दम्पत्ति धोरीभाई और हेतबा धन्य हुए। क्योंकि श्रीजी महाराज के आशीर्वाद से डुंगर भक्त का इस भूमि पर प्राकट्य हुआ। स्वयं मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंद स्वामी ने आशीर्वाद देते हुए कहा,'यह बालक तो साधु होकर श्रीजी महाराज की सर्वोपरी निष्ठा का प्रवर्तन करेंगा और कथावार्त्ता करके संप्रदाय का विकास करेंगा।' और यह बात सही में सत्य साबित हुई। 3. बचपन के स्वानुभव की बात करते हुए स्वामीश्री ने कहा,'मैं बचपन में (पौने दो वर्ष की आयु में) अक्षरधाम में गया था। परन्तु श्रीजी महाराज तथा अक्षरमूर्ति गुणातीतानंद स्वामी ने मुझ से कहा, आपको तो पृथ्वी पर हमारी शुद्ध उपासना प्रवर्तन के लिए और अनंत पतित जीवों के उधार के लिए भेजा है। और आपके द्वारा तो अभी कई काम करवाने है।' 4. इस कथन की प्रतिति कराते हो ऐसे डुंगर भक्त द्वारा गाँव की सीमा में मिट्टी के मंदिरों का निर्माण होता था - वरताल से विद्वानो द्वारा लिखने के बाद बेकार कागज फैंक दिए गए थे, ऐसे शास्त्रों के पृष्ठ एकत्र करके और मंदिर की सीढ़ीयों पर बैठकर वे उनका पाठ करते थे। - सद्गुरुओं के आसन पर जाकर वे सच्चे गुरु की खोज में थे। - किशोरावस्था में पिता को वैराग्य और सांख्य का उन्होंने उपदेश दिया। - उनके द्वारा त्यागी होने की अनुमति प्राप्त की। - यह उनकी दिव्य अवतरण के प्रमाण है। 5. केवल 19 वर्ष की आयु में त्यागाश्रम की दिक्षा लेकर उनका नाम यज्ञपुरुषदासजी रखा गया। - भगवान स्वामिनारायण के कृपापात्र विज्ञानानंद स्वामी के वे प्रिय शिष्य थे। - अपने गुरु के प्रति अप्रतिम स्नेह के उनके उद्गार थे,'मेरे

गुरु विज्ञानानंद स्वामी श्रीजी महाराज के साथ रहे हुए और महाराज की अपार महिमा जानते थे। और उसका उन्हें अनुभव था।' – उनके द्वारा यज्ञपुरुषदासजी ने श्रीजी महाराज के सर्वोपरीता और गुणातीतानंद स्वामी अक्षरब्रह्म है, इस बात की उन्होंने दृढ़ता की। – उसी वर्ष उन्हें भगतजी महाराज का योग हुआ। – उनके पास से उन्होंने भगवान स्वामिनारायण प्रबोधित अक्षरपुरुषोत्तम उपासना के सिद्धांत का ज्ञान प्राप्त किया। – उनको यह परम सत्य मिल गया। 6. इसी पल दृढ़ निश्चिय हो जाने से शास्त्रीजी महाराज ने अपना कर्तव्य दृढ़ कर लिया। – वे स्वयं सिद्धांत वाहक पुरुष थे। इसलिए ही वे श्रीजी के सिद्धांत वाहक बने। प्रचंड संघर्ष रखकर तपस्या, अनेक कठिनाईयाँ झेलकर उनका शुद्ध कंचन जैसा व्यक्तित्व बना था। –वे अपने कर्तव्य को पूर्ण करके ही रहे। – और उन्होंने आनेवाली अनेक पीढ़ीयों के लिए अक्षरधाम का मार्ग खुला कर दिया। – इस हेतु उनकी प्रतिबद्धता के लिए यह दो उद्‌गार ही पर्याप्त है। – वे कहते थे कि,'मैं तो अक्षरपुरुषोत्तम का बैल हूँ। – अक्षरपुरुषोत्तम के लिए तो हमें श्वपच के घर बिक जाना पड़े तो भी कम है।' – कितनी निम्न कक्षा फिर भी कितनी उच्च कक्षा पर पहुँचने की उनकी तैयारी थी। 7. स्वामीश्री ने हमें क्या दिया? – भगवान स्वामिनारायण के सनातन सिद्धांत के लिए अपने प्राणों की चिंता किए बिना समाधान नहीं करने की निश्चलता प्रदान की। – संप्रदाय के अज्ञान- अंधकार को मिटाकर ज्ञान का उजाला किया। – संप्रदाय को सीमित क्षेत्र से मुक्त करके विश्वभर में मोक्षमार्ग के रुप में प्रतिष्ठित किया। – संस्कृति के शंखनाद करते हुए उपासना के मंदिर समाज को अपर्ण किए। – एक नए युग का निर्माण हुआ और आज उसके फलस्वरुप सात समुद्र के पार अक्षरपुरुषोत्तम उपासना के मंदिरों का विजय ध्वज लहरा रहा है। – स्वामीश्री के ऐसे विराट कार्य की समीक्षा स्वयं ब्रह्मा या सरस्वती देवी भी युगों तक लिखती रहे फिर भी वह समर्थ नहीं हो सके। – इसलिए इस विराट कार्य समीक्षा और भावांजली के लिए गुजरात के साक्षर दौलतराम कहते है कि,'स्वामी! जिस कार्य करने के लिए श्रीजी महाराज को दुबारा अवतार लेना पड़ता वह कार्य आपने किया है। भविष्य में आपके शिष्य आपकी सुवर्ण की मूर्तियाँ स्थापित करेंगे।' 8. हमारी भावी पीढ़ी के उज्जवल संस्कारों के लिए स्वामीश्री के यह उद्‌गार है कि, मेरा कर्तव्य चालू रहेगा और स्वामिनारायण भगवान सर्वोपरी है, सर्व अवतार के अवतारी है, इस उपासना का प्रवर्तन समग्र विश्व में होगा। – जी हाँ, स्वयं के इन शब्दों की प्रतिति के रुप में इस विराट कार्य के भावी सुकानी को संस्था के लिए पूर्णरुप से तैयार करके रखा था। – वे थे ब्रह्मस्वरुप योगीजी महाराज और प्रकट ब्रह्मस्वरुप प्रमुखस्वामी महाराज। – यह कोई व्यवहारिक या कारोबारी सुकानी नहीं है। परन्तु सर्वोच्च आध्यात्मिक स्थिति पर पहुँचे हुए गुणातीत गुरु है, महारथी है। – इसके अलावा शास्त्रीजी महाराज के सिद्धांत, आज्ञा, उपासना, सद्‌भाव और पक्ष की सतत अभिवृद्ध करने के लिए कौन समर्थ है। – प्रत्येक प्रसंग पर शास्त्रीजी महाराज के स्वमुख के शब्दों की झांकी होती रहती है, मानो कि स्वामीश्री ने अपनी प्रतिकृतियाँ तैयार न रखी हो! – इन दोनों गुरुओं ने शास्त्रीजी महाराज का यह कर्तव्य चालू रखकर उन्होने अक्षरपुरुषोत्तम सिद्धांत रुपी जो दीपक प्रज्वलित किया है, उसे पूरे विश्व के फलक पर रख दिया है। यह दीपक अनेक मुमुक्षुओं के जीवन में प्रकाश दे रहा है। – प्रमुखस्वामी महाराज की पावन निश्रा में मानव-कल्याण की अनेक विविध प्रवृत्तियों से इस संस्था के कार्यो में 150 वर्ष के बाद भी सभी को शास्त्रीजी महाराज के कर्तव्यों की महक की अनुभूति हो रही है। – शास्त्रीजी महाराज ने कहे हुए शब्दों की प्रतिति युगों तक सभी को संदेश देती रहेगी। – 'मेरे बाद भी मेरा कर्तव्य चालू रहेगा... हवा के कण-कण में, सागर की प्रत्येक लहरों में और जमीन की प्रत्येक रजकण में यह शब्द गुंजते ही रहेंगे... मेरा कर्तव्य चालू ही रहेगा।' 9. आईए हम भी सार्ध शताब्दि का महोत्सव इन शब्दों द्वारा चालू रखें।

2. यौवन के सुहृद (प्रमुखस्वामी महाराज का युवकों के प्रति प्रेम)

1. प्रमुखस्वामी महाराज वे यौवन के सुहृद है। – अर्थात् युवानों के प्रति सुहृदयता – युवानों के लिए उन्होंने मानो अपना हृदय समर्पित कर दिया है। – हमें प्रश्न होगा कि, क्या ऐसा संभव है? क्योंकि युवान युवानी से भरे हुए है और स्वामीश्री 94 वर्ष की उम्र के – फिर भी यह मित्रता सत्य है। 2. जिस प्रकार योगीजीमहाराज कहते थे कि, 'युवकों मेरा हृदय है।' उसी प्रकार स्वामीश्री भी युवकों को अपना हृदय मानते है। – जिस प्रकार हृदय पूरे शरीर को शुद्ध रक्त पहुँचाता है, उसी प्रकार स्वामीश्री युवकों को शुद्ध चारित्र्य, आचार-विचार सिखाते है। – स्वामीश्री युवाओं के पास शुद्ध चारित्र्य का आग्रह रखते है। 3. स्वामीश्री को युवाओं के प्रति अपार प्रेम है। – युवकों के लिए मैं क्या क्या कर दूं ऐसी भावना – उसकी अपेक्षा युवकों भी स्वामीश्री के लिए समर्पित रहते है। – स्वामीश्री के एक वचन पर युवकों संसार छोड़कर साधु होने के लिए तैयार हो जाते है। – (प्रसंग लिखें।), कीर्तन, स्वामीश्री के उदगार भी लिख सकते है। 4. स्वामीश्री युवाओं को पिता की तरह सलाह देते है और माता की तरह देखभाल करते है। – कभी तो मित्र बनकर युवाओं के साथ हाथ मिलाकर युवाओं के साथ स्नेह करते है। सच्चे मार्गदर्शक बनकर सच्चे राही बनकर गलत मार्ग पर चलते हुए युवकों को हाथ पकडकर उन्हे सही मार्ग पर लाते है। (प्रसंग लिखें) – व्यसन दुषण में फंसे हुए युवको को बहुत प्रेम से या हल्की सी डांट देकर भी व्यसन की चुंगल में से

छूडाते है। (प्रसंगो लिखें) 5. स्वामीश्री युवाओं के संस्कार के लिए बहुत जागृत है। – युवा अधिवेशन का आयोजन करते – शिबिरों में युवाओं को आध्यात्मिकता के साथ समाज और परिवार के साथ किस प्रकार रहे उसका मार्गदर्शन देते है। (प्रसंग लिखें) – छात्रवास में रहते युवकों के लिए हरेक प्रकार की देखभाल रखवाते है। (प्रसंगो लिखें) – यदि युवकों को मिल न सके तो पत्र द्वारा भी समाचार प्राप्त कर लेते है, बिमार युवकों की संभाल रखवाते है। (प्रसंग लिखें) 6. स्वामीश्री के युवाओं के प्रति प्रेम की फलश्रुति क्या है तो आज स्वामीश्री ने समाज में ऐसे चारित्र्यशिल युवाओ की फोज खड़ी कर दी है। – स्वामीश्री ने समाज को चारित्रवान युवानों की भेंट दी है। – नीतिमत्ता – प्रमाणिकता – समाज को मददरुप होने की भावना इन सभी गुणों का स्वामीश्री ने युवानों में सिंचन किया है। (प्रसंग लिखें) 7. युवाओं के प्रति स्वामीश्री के स्नेह की पराकाष्टा – युवा षष्टिपूर्ति महोत्सव – युवा प्रवृत्ति को स्वामीश्री ने बहुत प्रोत्साहन देकर 60 वर्ष का भव्य और दिव्य महोत्सव मनाया। – युवा प्रवृत्ति का डंका पूरे विश्व में बज गया। 8. उपसंहार – इस प्रकार स्वामीश्री इतनी बड़ी उम्र में युवाओं के प्रति सृहदभाव रखकर युवाओं के सर्वस्व बने है।

3. स्वच्छता : गुणातीत सत्पुरुष का आचरण और जनसमाज को बताया हुआ मार्ग।

1. श्रीमद् भगवद् गीता में श्रीकृष्ण भगवान कहते है कि, 'महानपुरुष जो जो आचरण करते है, वे जिसे प्रमाणित करते है उनका लोग अनुसरण करते है।' – इस गीता वचन के अनुसार स्वामिनारायण संप्रदाय के गुणातीत सत्पुरुषों ने उपदेश द्वारा आचरण करके जन समाज को स्वच्छता की राह दिखाई है। 2. अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी जूनागढ़ मंदिर के महंत होने पर भी रोज सुबह मंदिर के चोक में झाडू लगाते थे। – भगतजी महाराज ने भी झाडू लगाया है। – मरे हुए कुत्ते को हटाया है। – शास्त्रीजीमहाराज ने भी झाडू लगाकर रसोईघर साफ करके स्वच्छता की राह दिखाई है। 3. योगीजीमहाराज और प्रकट गुरुहरि तो स्वच्छता और सेवा में खरे उतरे है। – योगीजीमहाराज की स्वच्छता के बारे में सतर्कता का प्रसंग लिख सकते है। – जिस हरिभक्त के घर उनका निवास हो वहाँ से निकलते समय उसके बाथरुम, शौचालय स्वयं साफ करवाते थे। 4. स्वामीश्री की भी स्वच्छता के लिए ऐसी ही अभिरुची रही है। – प्रत्येक मंदिरों के बाथरुम, शौचालय आदि स्वयं ने साफ किये है। – लघुशंका करने के बहाने बाथरुम में जाकर बाथरुम साफ कर दिया है। एक शब्द भी उच्चार किये बिना केवल आचरण से ही सब को स्वच्छता का संदेश दिया है। – उत्सव, समैया पूरा होने के बाद स्वामीश्री ने स्वयं हरिभक्तों के शौचालय साफ किये है, तो कभी जूठे पत्तल-दूने की लारी को धक्के मारकर स्वच्छता में वे सामिल हो गये है। – अन्य प्रसंग भी लिख सकते है। 5. इन सभी के शिरमोर के समान संप्रदाय के इतिहास में अनूठा प्रसंग जो स्वयं के जन्मदिन पर दातून की डंडीयाँ उठाई – हरिभक्तों ने इधर-उधर फैंकी हो उसे उठाकर स्वामीश्री ने स्वच्छता की है। अन्य प्रसंग भी लिख सकते है। 6. स्वामीश्री की ऐसी प्रतिबद्धता के कारण समाज में मंदिरों की अनूठी छाप है। – गांधीनगर और दिल्ही अक्षरधाम में हजारों मुलाकातियों की भरमार होने पर भी वहाँ की स्वच्छता सभी को प्रभावित करती है। – स्वामीश्री के कार्यकर – संतों के पास स्वच्छता रखवाते है। – और मंदिर के निरीक्षण के दौरान स्वच्छता देखकर प्रसंशा बताते है। (प्रसंग लिख सकते है) 7. छात्रवास गुरुकुल की मुलाकात में भी स्वामीश्री की अभिरुचि के दर्शन होते है। – युवकों चाहे जितनी अस्वच्छता छिपाने जाये परंतु स्वामीश्री की नजर में वह आ जाती है। – मीठी टकोर करते है – गंदा रखने से रोग होते है – अभ्यास का सुख नहीं आता – स्वामीश्री जहाँ निवास करते है वहाँ से वापस जाते समय चाहे जितना जल्दी हो फिर भी सेवकों को बाथरुम – शौचालय तथा घर में भी सफाई करके निकलने की सूचना देते है। 8. घर को भी मंदिर जैसा स्वच्छ रखने की प्रेरणा देते है – बच्चों को भी प्रेरणा देते है। – स्वच्छता के लिए हमारे इष्टदेव ने आचरण करके समाज को मार्ग दिखाया है उसी मार्ग पर गुरुपरंपरा और स्वामीश्री वर्तमान काल में समाज को राह दिखा रहे है। उपसंहार : आज समाज और राष्ट्र की स्वच्छता में योगदान देकर सभी को गुणातीत पुरुषों ने दिखाई हुई राह पर गति और प्रगति करना है।

समाप्त